NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2017

# HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

Time: 2 hours 80 marks

---

**PLEASE READ THE FOLLOWING INSTRUCTIONS CAREFULLY**

1. This question paper consists of 8 pages. Please check that your paper is complete.

2. Read the instruction to each question carefully.

3. Answer all sections.

4. All answers must be written in the Hindi script.

5. You may use the last 4 pages of the Answer Book for rough work. Cross out all rough work before handing in your answer book.

---

IEB Copyright © 2017

# भाग क

## प्रश्न एक

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में हिन्दी में दीजिए। **(३०)**

### समय

**अनिता शर्मा**

समय, सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूं कहें कि भाग रहा है। अक्सर इधर-उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नही मिलता। वास्तव में हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नही पाते और पिछड जाते हैं। समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं।

विकास की राह में समय की बरबादी ही सबसे बडा शत्रु है। एक बार हाँथ से निकला हुआ समय कभी वापस नही आता है। हमारा बहुमूल्य वर्तमान क्रमशः भूत बन जाता है जो कभी वापस नही आता। सत्य कहावत है कि बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नही आ सकते। कबीर दास_जी ने कहा है कि,

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब।।

सच ही तो है मित्रों, किसी भी काम को कल पर नही टालना चाहिए क्योंकि आज का कल पर और कल का काम परसों पर टालने से काम अधिक हो जायेगा। बासी काम, बासी भोजन की तरह अरुचीकर हो जायेगा। समय जैसे बहुमूल्य धन को सोने-चाँदी की तरह रखा नही जा सकता क्योंकि समय तो गतिमान है। इस पर हमारा अधिकार तभी तक है जब हम इसका सदुपयोग करें अन्यथा ये नष्ट हो जाता है। समय का

IEB Copyright © 2017

उपयोग धन के उपयोग से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सभी की सुख-सुविधा इसी पर निर्भर है।

**चाणक्य के** अनुसार- जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नही रखता, उसके हाँथ असफलता और पछतावा ही लगता है।

समय जितना कीमती और वापस न मिलने वाला तत्व है उतना उसका महत्व हम लोग प्रायः नही समझते। परन्तु जो लोग इसके महत्व को समझते हैं वो विश्व पटल के इतिहास पर सदैव विद्यमान रहते हैं।

**"ईश्वरचन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे। जब वे कॉलेज जाते तो रास्ते के दुकानदार अपनी घड़ियाँ उन्हे देखकर ठीक करते थे।"**

**"गैलेलियो दवा बेचने का** काम करते थे। उसी में से थोड़ा-थोड़ा समय निकाल कर विज्ञान के अनेक आविष्कार कर दिये।"

"घर-गृहस्थी के व्यस्त भरे समय में **हैरियट वीचर स्टो ने** गुलाम प्रथा के विरुद्ध आग उगलने वाली पुस्तक "टॉम काका की कुटिया" लिख दी जिसकी प्रशंसा आज भी बेजोड़ रचना के रूप में की जाती है।"कहने का आशय है कि प्रत्येक विकासशील एवं उन्नतशील लोगों में एक बात समान है- समय का सदुपयोग।

समय का प्रबंधन प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का कालचक्र प्रकृति में नियमित है। दिन-रात, ऋतुओं का समय पर आना-जाना है । यदि कहीं भी अनियमितता होती है तो विनाष की लीला भी प्रकृति सीखा देती है। समय की उपेक्षा करने पर कई बार विजय का पासा पराजय में पलट जाता है। **नेपोलियन ने** आस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया कि वहाँ के सैनिकों ने पाँच मिनट का विलंब कर दिया था, लेकिन वहीं कुछ ही मिनटो में नेपोलियन बंदी बना लिया गया क्योंकि उसका एक सेनापति कुछ विलंब से आया। वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की पराजय का सबसे बड़ा कारण समय की अवहेलना ही थी। कहते हैं खोई दौलत फिर भी कमाई जा सकती है।

IEB Copyright © 2017 

भूली विद्या पुनः पाई जा सकती है किन्तु खोया हुआ समय पुनः वापस नही लाया जा सकता सिर्फ पश्चाताप ही शेष रह जाता है।

समय के गर्भ में लक्ष्मी का अक्षय भंडार भरा हुआ है, किन्तु इसे वही पाते हैं जो इसका सही उपयोग करते हैं। जापान के नागरिक ऐसा ही करते हैं, वे छोटी मशीनों या खिलौनों के पुर्जों से अपने व्यावसायिक कार्य से फुरसत मिलने पर नियमित रूप से एक नया खिलौना या मशीनें बनाते हैं। इस कार्य से उन्हे अतिरिक्त धन की प्राप्ति होती है। उनकी खुशहाली का सबसे बड़ा कारण समय का सदुपयोग ही है।

**समर्थ गुरू स्वामी रामदास कहते थे कि-**

**एक सदैव पणाचैं लक्षण।**
**रिकामा जाऊँ ने दो एक क्षण।।**

अर्थात, "जो मनुष्य वक्त का सदुपयोग करता है, एक क्षण भी बरबाद नही करता, वह बड़ा सौभाग्यवान होता है।"

समय तो उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढी है। जीवन का महल समय की, घंटे-मिनटों की ईंट से बनता है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर गरीब नही बनाया उसने अपनी बहुमुल्य संपदा यानि की चौबीस घंटे सभी को बराबर बांटे हैं। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो परन्तु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्जवल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझ कर बरबाद कर रहे हैं वही पल हमारे लिए सौभाग्य की सफलता का क्षण हो। आने वाला पल तो आकाश कुसुम की तरह है इसकी खुशबु से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।

**फ्रैंकलिन ने कहा है** – समय बरबाद मत करो, क्योंकि समय से ही जीवन बना है।

ये कहना अतिशयोक्ति न होगी कि, वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नही करती। हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा-पूरा उपयोग करें।

IEB Copyright © 2017

१.१ ''समय'' को अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ? (४)

१.२ निम्नलिखित पंक्तियों को अपने शब्दों में संक्षेप व्याख्या कीजिए

**"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।**

**पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब"।।?** (४)

१.३ **" विकासशील एवं उन्नतशील "**? अपने शब्दों में समझाइए। (४)

१.४ इन मुहावरों के अर्थ लिखिए ः

१.४.१ **वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नही करती।** (३)

१.४.२ **बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नही आ सकते।** (३)

१.५ समानार्थी शब्द लिखिए।

१.५.१ ऋतु

१.५.२ विजय

१.५.३ जीवन

१.५.४ कार्य (४)

१.६ विलोल शब्द लिखिए।

१.६.१ आकाश

१.६.२ मूल्यवान

१.६.३ शत्रु

१.६.४ सौभाग्य (४)

१.७ इस कहानी से हम क्या सीखते है ? (४)

**[३०]**

IEB Copyright © 2017 

# भाग ख

## प्रश्न दो

**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका संक्षिप्त विवरण कीजिए**

बसंती ने मॉ की कोठोरी की ओर देखा, "अभी आती ही होगी," और प्याले मे उनके लिए चाय छानने लगी । बहू चूपचाप पहले ही चली गई थी, अब नरेन्द्र भी चाय का

आखिर घॅट पीकर उठ खड़ा हुआ, केवल बसंती, पिता के हिलज में बैठी मॉ की राह देखने लगी । गजाधर बाबू ने एक घूॅट चाय पी फिर कहा, "बिट्टी, चय तो फीकी है ।"

लइए, चीनी और डाल दूॅ ! " बसंती बोली ।

"रहने दो, तुम्हारी अम्मा जब आएगी, तभी पी लॅूगा ।"

थोडी देर मे उनके पत्नी हाथ मे अर्घ्य का लोटा लिए निकली और अशुद्ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया । उन्हें देखते ही बसन्ती भी उठ गई । पत्नी ने आकर गजाधर बाबू को देखा और कहा , "अरे आप अकेले बैठ है यह सब कहॉ गए ?" गजाधर बाबू के मन में फॉस सी करक उठी, "अपने काका मे लग गए है आखिार बच्चे ही हैं ।"

पत्नी आकर चौकी में बैठ गई, उन्होंने नाक भैं चढ़ाकर चारो ओर जूठे बर्तनों ओर जूठे बर्तनो को देखा । फिर कहा, "सारे में जैठे बर्तन पढ़े हैं । इस घर मे धरम-करम कुछ नहीं । पूजा करके सीधे चोके में घुसी ।" फिर उन्होने नौ नौकर को पुकारा, जब उत्तर न मिला, तो एक बार और उच्च्व स्वर मे, फिर पति की ओर देखकर बोलि — "बहू ने भेजा होग बाजार ।" और एक लम्बी सॉस लेकर चुप हो रही ।

गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इन्तजाम करते रहे । उन्हे अचानक ही गनेशी की याद आ गई । रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गर्म गर्म पूरियॉ और जलेबी बनाता था । गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते उनके लिए जलेबियॉ ओर चाय लाकर रख देता था । चाय भी कितनी बढ़िया , कॉच के ग्लास मे ऊपर तक भरी लबाबल, पूरे ढाई चम्मच चीनै ,और गाढी मलाई । पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहॅुचे, गनेश ने चाय पहॅुचाने मे कभी देर नहीं की । क्या मजाल कि कभी उसके कुछ कहान पड़े ।

**[१०]**

IEB Copyright © 2017

# भाग ग

## प्रश्न ३

निम्न विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न का उत्तर दीजिए। **(२४)**

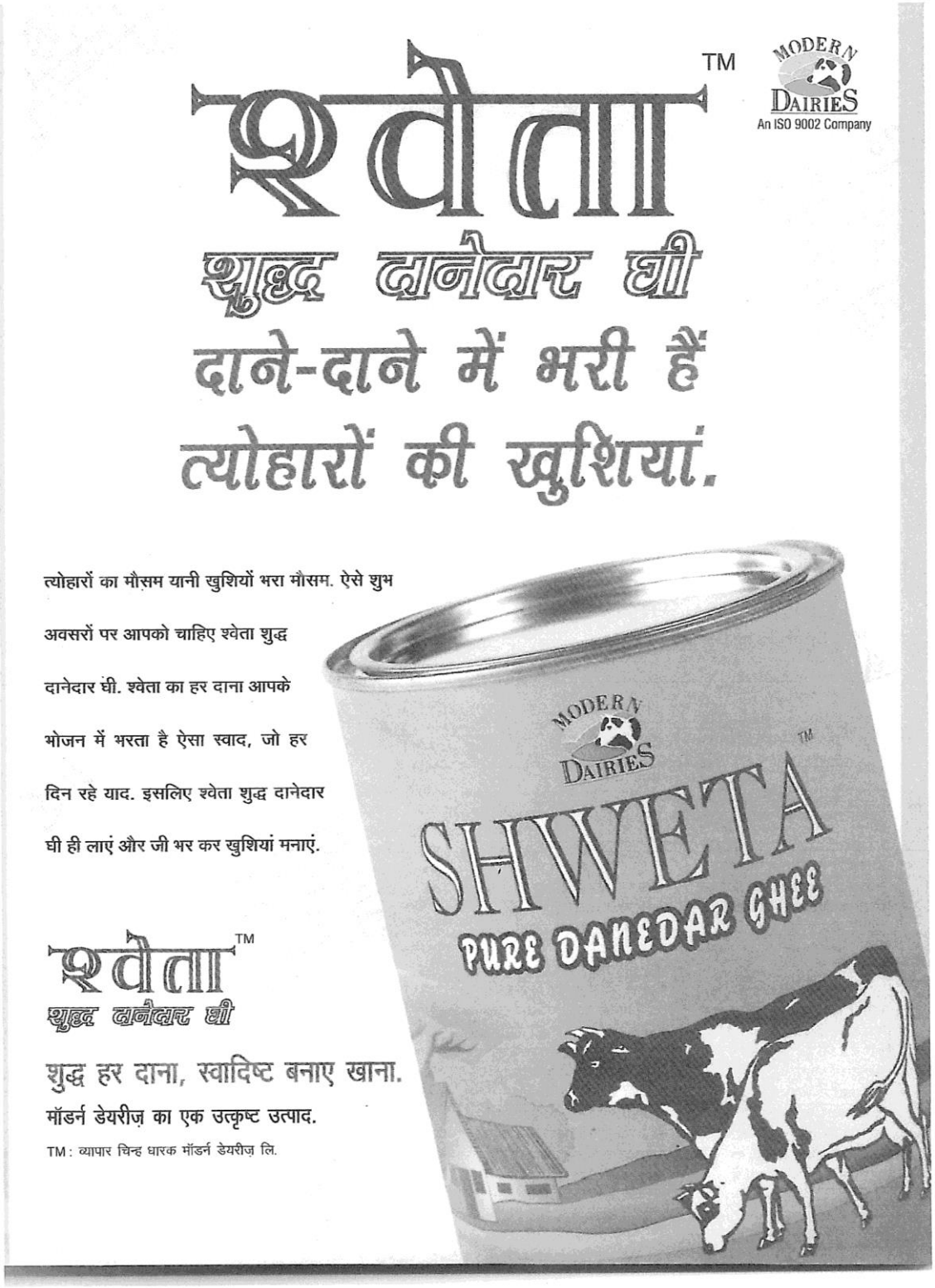

३.१ यह किस वस्तु का विज्ञापन है ? (२)

३.२ *"दाने-दाने में भरी हैं त्योहारों की खुशियाँ"* ः

३.२.१ *"त्योहार"* शब्द क्यों प्रयोग किया गया है ? (४)

३.२.२ ये क्यों बड़े अक्षरों में है ? (४)

३.३ *शुद्ध हर दाना स्वादिष्ट बनाए खाना ...* यह वाक्य आप में क्या जाग्रित करता है ? (४)

३.४ गाय का चित्र क्यों प्रयोग किया गया है? (४)

३.५ तीन भावात्मक शब्द विज्ञापन से चुन कर लिखिए तथा उनके भावना भी बताई? (६)

## प्रश्न ४

निम्नलिखित वित्र को ध्यान पूर्वक देखकर प्रश्नों का उत्तर दीजिए। **(१६)**

[Source: *IndianFunnyPicture.com*]

४.१ इस चित्र को उचित शीर्षक दीजिए। (२)

४.२ खड़े हुए आदमी के चहरे को देखकर आप क्या सोचते है निम्नलिखित शब्द के अनुसार लिखिए ः

४.२.१ भावना ः (२)

४.२.२ घटना ः (२)

४.३ चित्र के अध्ययन कर के बताओ क्या हो रहा हैं। (२)

४.४ निम्नलिखित प्रश्नों चित्र के अनुसार उत्तर का कारण दीजिए।

४.४.१ नीचे बैठे हुए आदमी कि स्थिथि बताओं? उत्तर का कारण बताइए। (४)

४.४.२ प्लाकार्ड पर क्या संकेत है और पुरूष के लिए यह क्या अर्थ है? (४)

**[४०]**

**Total: 80 marks**

IEB Copyright © 2017